IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के मध्य तनाव की स्थिति का अध्ययन (आरंग विकासखण्ड के विषेष संदर्भ)

डॉ. प्रमिला नागवंषी
सहायक प्राध्यापक समाजषास्त्र
चन्द्रपाल डड़सेना शास. महा. पिथौरा
जिला–महासमुन्द (छ.ग.)

प्रस्तावना–

वृद्धावस्था जीवन की अंतिम अवस्था होने के साथ ही विभिन्न समस्याओं को भी साथ लेकर आती है। इस अवस्था में व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक रुप से कमजोर होने लगता है, तथा परिवार में अन्य सदस्यों के मध्य सामंजस्य न हो पाने के कारण तनाव की स्थिति निर्मित होती है। वर्तमान में सामाजिक परिवर्तन की गति काफी तीव्र गति बढ़ रही है, जिससे आज के समय मे सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक संरचना एवं सामाजिक गतिषीलता में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये हैं। आज का युवा पीढ़ी अपने ज्ञान एवं प्रयत्नों से विभिन्न क्षेत्रों में स्वयं की इच्छानुसार बढ़ना चाहती हैं। युवाओं में नयी ऊर्जा, जोष एवं उत्साह के कारण ये अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेना चाहती है, परंतु पुरानी पीढ़ी का युवा पीढ़ी के साथ सामंजस्य न हो पाने के कारण परिवार में तनाव की स्थिति निर्मित हो रही है, जिसका प्रभाव परिवार पर इस तरह से पड़ने लगा है, कि परिवार विघटित होने लगे है। जिससे वृद्धों का जीवन भी संकटग्रस्त होता जा रहा है। वृद्ध परम्परात्मक व्यवस्था एवं सामाजिक मूल्यों में बंधे रहना चाहते हैं। वहीं दूसरी तरफ युवा पीढ़ी तीव्र गति से परिवर्तन चाहती है। जिससे दोनों पीढ़ियों के मध्य वैचारिक मतभेद होने लगते हैं। आधुनिकता के फलस्वरुप युवा स्वयं विभिन्न कार्य हेतु निर्णय लेकर नये तरीकों से परिवार को संचालित करना चाहती है, परंतु वृद्ध परम्परात्मक ढंग से ही कार्यो का संचालन एवं नियमन करते हुए अपना महत्व बनाये रखना चाहते हैं, किन्तु इससे पारिवारिक सदस्यों में आपसी तनाव या टकराव बढ़ने लगता हैं।

अध्ययन का महत्व–

भारतीय परिवाारों में प्रारंभ से ही वृद्धों को परिवार में सुरक्षा एवं संरक्षण प्राप्त रहे हैं, साथ ही परिवार के सभी निर्णयों में निर्णयकर्ता की भूमिका रही हैं, परंतु आज भारतीय समाज भी परिवर्तन के फलस्वरुप विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं प्रवजन के कारण परिवर्तित हुआ है, जिसने संयुक्त परिवार, जाति व्यवस्था व ग्रामीण समुदाय जैसी वृद्धों को संरक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं को अपेक्षाकृत प्रभावित किया है, साथ ही तकनीकी उन्नति, जनसंचार के साधनों के प्रभाव तथा तीव्र सामाजिक गतिषीलता में संचालित जीवन शैली, पारंपरिक मूल्य व्यवस्था ने वृद्धजनों को समाज में प्रथागत रुप से प्राप्त सम्मानजनक स्थिति में परिवर्तन लाया है।

इस अध्ययन के माध्यम से पारिवारिक सदस्यों के साथ वृद्धों के तनाव की स्थिति का अध्ययन किया गया है कि वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के सामंजस्य न हो पाने के कारण वृद्धों एव पारिवारिक सदस्यों दोनों का जीवन तनावग्रस्त एवं संकट ग्रस्त होता जा रहा हैं, अतः यह अध्ययन महत्वपूर्ण है।

अध्ययन का उद्देष्य–वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के मध्य तनाव की स्थिति को ज्ञात करना

अध्ययन पद्धति– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्रीय सर्वेक्षण अध्ययन पद्धति के द्वारा किया गया है। शोध अध्ययन में अध्ययन पद्धति को तीन भागों में विभक्त कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है–

(1) अध्ययन क्षेत्र–प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य में रायपुर जिले के आरंग विकासखण्ड पर आधारित है।

(2) उत्तरदाताओं का चयन– अध्ययन क्षेत्र में कुल 240 उत्तरदाताओं का चयन उद्देष्यपूर्ण निदर्षन के रुप में किया गया है।

(3) तथ्य संकलन एवं प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधि– प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों का संकलन साक्षात्कार एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा किया गया है।

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं विष्लेषण– प्राप्त तथ्यों का वर्गीरण पश्चात् सारणीयन किया गया तथा सारणी के माध्यम से तथ्यों का विष्लेषण क्रमबद्ध रुप से किया गया तत्पष्चात् निष्कर्ष निकाला गया।

समस्या का प्रस्तुतीकरण–

तालिका क्रमांक–01

उत्तरदाताओं की लिंग संबंधी जानकारी

क्रमांक	लिंग	आवृत्ति	प्रतिषत
1	पुरुष	120	50
2	महिला	120	50
योग		240	100

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 से ज्ञात होता है कि कुल उत्तरदाताओ में 50 प्रतिषत पुरुष वृद्ध उत्तरदाता तथा 50 प्रतिषत महिला वृद्ध उत्तरदाता सम्मिलित है। महिला एवं पुरुष दोनों उत्तरदाताओं के सम्मिलित होने से अध्ययन के संबंध में सूक्ष्म एवं गहन जानकारियां प्राप्त होती है।

तालिका क्रमांक–02

उत्तरदाताओं की आयु संबंधी जानकारी

क्रमांक	आयु	आवृत्ति	प्रतिषत
1	60–70	156	65.0
2	70–80	62	26.0
3	80–90	17	7.0
4	90 से अधिक	05	2.0
योग		240	100.0

उपरोक्त तालिका क्र. 02 से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में सबसे अधिक
65 प्रतिषत वृद्ध उत्तरदाताएँ 60–70 आयु वर्ग के है, 26 प्रतिषत 70 वर्ष से 80 आयु वर्ग,
7 प्रतिषत 80 से 90 आयु वर्ग तथा 2.0 प्रतिषत 90 से अधिक आयु वर्ग के उत्तरदाता सम्मिलित है। अतः अध्ययन हेतु विभिन्न के उत्तरदाता सम्मिलित हैं।

तालिका क्रमांक–03

उत्तरदाताओं के पारिवारिक सदस्यों के मध्य तनाव होने संबंधी जानकारी

क्रमांक	तनाव का होना	आवृत्ति	प्रतिषत
1	हाँ	141	59.0
2	नहीं	99	41.0
योग		240	100.0

प्रस्तुत तालिका क्र 03 से ज्ञात होता है कि 59 प्रतिषत वृद्ध उत्तरदाताओं ने वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के मध्य ज्ञात तनाव की बात कही जबकि 41 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने इस संबंध में नहीं में जवाब दिये हैं। ये ऐसे उत्तरदाता है जिनके पारिवारिक सदस्य अपने निवास स्थान से रोजगार हेतु बाहर रहते हैं, तथा कुछ सदस्य दूसरे निवास गृह में रहते हैं।

तालिका क्रमांक–04

उत्तरदाताओं के पारिवारिक सदस्यों के मध्य तनाव होने संबंधी जानकारी

क्र.	कारण	आवृत्ति	प्रतिषत
1	परिवारिक सम्पत्ति के वितरण एवं क्रय विक्रय को लेकर	79	56.1
2	बच्चों के षिक्षा को लेकर	14	10.0
3	विवाह से संबंधित मामलों को लेकर	17	12.0
4	समाजिक–धार्मिक अनुष्ठानों एवं त्यौहारों के मामलों को लेकर	13	9.2
5	भोगविलास की सामग्री क्रय करने के मामलों में	10	7.1
6	अन्य	08	5.6
योग		141	100.0

उपरोक्त तालिका क्र. 04 से यह ज्ञात होता है कि सबसे अधिक वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के मध्य तनाव के कारणों में 56.1 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने पारिवारिक सम्पत्ति के वितरण एवं क्रय विक्रय को प्रमुख कारण बताया हैं। 12 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने विवाह से संबंधित मामलों को लेकर, 10 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने बच्चों की षिक्षा को लेकर,
9.2 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने सामाजिक–धार्मिक अनुष्ठानों एवं त्यौहारों के मामलों को लेकर,
7.1 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने भोगविलास की सामग्री क्रय करने के मामलों में तथा 5.6 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने अन्य मामलों जैसे बाहर घूमने जाने एवं रिष्तेदारों को दिये जाने वाले उपहार को तनाव का कारण बताया है।

तालिका क्रमांक–05

तनाव संबंधी मामलों का निराकरण होने संबंधी जानकारी

क्र.	निराकरण होना	आवृÙा	प्रतिषत
1	हाँ	66	46.8
2	नहीं	75	53.2
	योग	141	100

प्रस्तुत तालिका क्र. 05 से यह ज्ञात होता है कि तनाव संबंधी मामलों का निराकरण होने संबंधी मामलों में 46.8 प्रतिषत उÙारदाताओं में निराकरण की बात कही जबकि 53.2 प्रतिषत उÙारदाताओं ने नहीं होने की जानकारियाँ दी है। इन उÙारदाताओं ने बताया कि मामले कुछ समय के लिये ही हल हो पाते हैं, परंतु यह स्थायी निराकरण नहीं होता है।

तालिका क्रमांक–06

निराकरण हेतु महिलाओं से विचार–विमर्ष करने संबंधी जानकारी

क्र.	विचार विमर्ष करना	आवृÙा	प्रतिषत
1	हाँ	75	53.1
2	नहीं	66	46.9
	योग	141	100

प्रस्तुत तालिका क्र. 06 से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक सदस्यों के मध्य वृद्धावस्था में होने वाले तनाव का निराकरण संबंधी मामलों में 53.1 प्रतिषत उÙारदाताओं ने महिलाओं से विचार विमर्ष करने संबंधी जानकारियाँ दी है। जबकि 46.9 प्रतिषत उÙारदाताओं ने महिलाओं से विचार विमर्ष ने करने संबंधी बात कही। वर्तमान में भी कई परिवारों में पुरुष ही पारिवारिक समस्याओं का निराकरण करते हैं।

तालिका क्रमांक–07

तनाव का निराकरण के उपाय करने संबंधी जानकारी

क्र.	निराकरण के उपाय	आवृÙा	प्रतिषत
1	समस्या का कारण जानकार	28	20.0
2	तटस्थ रहकर	33	23.4
3	समझाइष देकर	17	12.0
4	परिवार से अलग करके	18	12.8
5	सामूहिक निर्णय द्वारा	19	13.4
6	असंमुष्ट सदस्यों की मांग पूरा करके	10	7.1
7	एक पक्ष को शांत करके	16	11.3
	योग	141	100

प्रस्तुत तालिका क्र. 07 से यह ज्ञात होता है कि वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के साथ होने वाले तनाव का निराकरण के उपाय संबंधी विवरण से यह स्पष्ट होता है कि कुल 141 उÙारदाताओं में सबसे अधिक 23.4 प्रतिषत उÙारदाताओं ने तटस्थ रहकर, 20 प्रतिषत उÙारदाताओं ने समस्या के कारण जानकर, 13.4 प्रतिषत उÙारदाताओं ने सामूहिक निर्णय द्वारा, 12.8 प्रतिषत उÙारदाताओं ने परिवार से अलग करके, 12 प्रतिषत उÙारदाताओं ने समझाइष देकर तथा 11.3 प्रतिषत उÙारदाताओं ने एक पक्ष को शांत करके निराकरण के उपाय के संबंध में जानकारियाँ दी है। इस तरह से अलग–अलग उपायों द्वारा तनाव का निराकरण किया जाता है। 7.1 प्रतिषत उÙारदाताओं का यह कहना है कि तनाव का शांत करने हेतु परिवार के असंतुष्ट सदस्यों की मांग पूरा करके ही तनाव का निराकरण किया जाता है।

सुझाव–

1. वृद्धावस्था में व्यक्ति को पारिवारिक सदस्यों के साथ मिलजुलकर रहना चाहिए।
2. बिना कारण का परिवार के अन्य सदस्यों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।
3. अपना अधिक समय धार्मिक कार्यो में व्यतीत करना चाहिए।
4. अपने विचारों को नयी पीढ़ी पर जबरदस्ती नहीं थोपना चाहिए।
5. वृद्धावस्था में लालच कम करना चाहिए।
6. अपने पारिवारिक सदस्यों की अन्य रिष्तेदारों या पड़ोसी के पास बुराई नहीं करना चाहिए।
7. वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के साथ अपषब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष– उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि वृद्धावस्था में पारिवारिक सदस्यों के मध्य होने वाले तनावों से वृद्धों का ही जीवन कष्टमय होता है अतः अपने वृद्धावस्था को ध्यान में रखते हुए सभी सदस्यों से मिलकर स्नेहपूर्वक रहने से परिवार में वृद्धों को सम्मान प्राप्त होते है तथा उनका जीवन सुखमय एवं सम्मानीय होता है।

Refrence-

1. **राजपुरिया अनिता, (2003) मध्यमवर्गीय परिवार, समस्याएँ एवं सामंजस्य, शताक्षी प्रकाषन रायपुर, पृ. 127** ।
2. Ganrade,K.K. (1975) Crisis of Values-A study of generation gap. Chetna, New Delhi.
3. Mahata, K.C. (1993) Socio-economic status of the aged- A case study, man in India 73 (3) p.201-213
4. **शुक्ला राजेष (2006), ग्रामीण संरचना एवं ग्राम विकास वैभव प्रकाषन रायपुर, पृ. 15–20**
5. A Yamunadevi, S.sulaja(2016) International Journal of Social Science vol-6 No.12 Dec,P.P.698-8-5